



What is Arya Samaj?

Arya Samaj is an institution founded by Maharishi Dayanand Saraswati based on the universal teachings of the Vedas. It is an organisation propagating universal message of the Vedas for the benefit of the entire humanity.

ARYAN VOICE

YEAR 37

13/2015-16

MONTHLY

July 2015

- **AGM - Sunday 26th July 2015** (See pages 20 for detailed information)
- **Indian Independence Day Celebrations - Sunday 16th August 2015.** (See pages 20 for detailed information)
- **Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together) Saturday 19th September 2015. Register NOW for a place!** (See pages 17 & 18 for detailed information)

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMEN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA
TEL: 0121 359 7727 E-mail- enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

10th Sacrament - Upanayan Sanskar

CONTENTS

The 10 Principles of Arya Samaj	3
Intellectuals should be given Adequate Respect - Krishan Chopra	4
१०वाँ-उपनयन संस्कार	आचार्य डॉ. उमेश यादव 6
International Yoga Day	Shailesh Joshi 12
Dayanand Anglo Vidyalaya (DAV) In Birmingham	14
Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)	16
Vedic Vivah Mela (Matrimonial Get Together) 2015	17
Donation Boxes - Kind request notice	19
Dates for your diary	20
News (पारिवारिक समाचार)	21
Important Notices	24

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.**
- 2. God is existent, formless and unchangeable. He is incomparable, omniscient, unborn, endless, just, pure, merciful, beginningless, omnipotent, the support and master of all, omnipresent, unaging, immortal, fearless, eternal, and holy, and the creator of the universe. To him alone is worship due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is the paramount duty of all Aryas to read them, teach and recite them to others and hear them being read.**
- 4. All persons should always be ready to accept the truth and to give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma, i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of the Arya Samaj is to do good to the whole World i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All ought to be treated with love, justice, and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (vidya) and dispel ignorance (avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone, but Should look for one's welfare in the welfare of all.**
- 10. In matters which affect the well-being of all people the individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority; in matters that affect him alone he is free to exercise his human rights**

Intellectuals should be given Adequate Respect By Krishan Chopra

तद्वै राष्ट्रमा स्रवति नावं भिन्नमिवोदकम् ।

ब्रह्मणं यत्र हिंसन्ति तद्राष्ट्रमा हन्ति दुच्छना ॥ अथर्ववेद ५.११.८

Tadvai rastrama sravati navam bhinnamivodkam I brahmanam
yatra hinsanti tadraastram hanti ducchna II

Atharva Veda 5.11.8

Meaning in Text Order

Tat = that

Vai = definitely

Rastram = nation

Aa sravati = leaks

Navam = boat

Bhinam = hole

Iva = like

Udakam = water

Brahmanam = intellectual

Yatra = where

Hinsanti = killed

Tad = that

Raastram= nation

Hanti = destroys itself

Ducchana = misfortunes

Meaning

A nation where intellectuals are prosecuted and insulted, that nation leads to misfortune and destruction as a boat with holes sinks in the water.

Contemplation

A nation is full of a variety of people and society needs all kinds of citizens. As Plato tells us some people are made of the metal of gold, some with silver, some with copper and others with iron. It means that people are not of the same calibre.

In the words of Plato, the intellectuals are made with the metal of gold. They are the elite in society. They are the guiding spirit of a nation. They are the pioneers in the field of advancement and progress of a nation. They are the dazzling stars of a nation. and their views should not be ignored. They should not be barred from expressing their opinion. Let the nation examine itself. . To exile them, persecute them or degrade them will be a national loss.

Where intellectuals are insulted and discouraged from expressing their opinion, that nation will eventually lose its glory. Bright nations aim to reach their zenith, love to attract the intellectual and open their doors for them and welcome with open arms. They confer upon them high national honours. Advanced nations try to attract intellectuals by providing them with excellent opportunities to research and financially rewarding them. They are gifted people and their contribution makes a nation glorious.

Not giving them adequate respect or not appreciating their far-sightedness is a national loss. Without their application of their intellectual capabilities, the nation will sink from glory as a boat with holes sinks in the water. For the comprehensive development of a nation, advancement is needed in all fields and that is only made possible by intellectuals.

O the builders of a nation! Establish these bright values in your nation. These traditions will become your pride. These intellectuals will bring welfare for the nation and enrich it with prosperity and glory.

१०वाँ-उपनयन संस्कार

आचार्य डॉ. उमेश यादव

उपनयन-उप+नयन=उपनयन अर्थात् उप-समीप और नयन-ले जाना । विद्याध्ययन हेतु जब बच्चे को गुरु अथवा आचार्य के पास ले जाया जाता है तब उस बच्चे का उपनयन होता है । उपनयन संस्कार विद्याध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व गुरु कुल अथवा माता-पिता के घर में किया जाता है । उपनयन के साथ ही बच्चा द्विज बनने की प्रक्रिया में आ जाता है । द्विज का मतलब दो बार जन्म लेना है । एक बार माता के गर्भ से तथा दूसरी बार विद्याध्ययन पूरा करके गुरु-गर्भ से । वस्तुतः विद्या की प्राप्ति के लिये ही उपनयन संस्कार एक महत्त्वपूर्ण आरम्भिक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे को विधिवत् द्विज बनने की प्रेरणा दी जाती है । उसे संस्कारित करते हुये विशेषरूप से यज्ञोपवीत/जनेऊ पहनाकर उपदेश दिया जाता है कि वह ईश्वर, माता-पिता और गुरु के प्रति सदैव श्रद्धावान रहे । यज्ञोपवीत/ जनेऊ के तीन धागों की यही मूल शिक्षा है । इसके साथ की गायत्री मंत्र का भी अर्थपूर्वक ज्ञान कराया जाता है जिसमें बुद्धि-विशेष व ईश्वर-आस्था की प्रार्थना मूलरूप से निहित है जो बच्चे को नितान्त ही शुद्ध मनोभाव के साथ जोड़ने में सहायक सिद्ध होता है ।

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः ।

तं रात्रीस्तिस्र उदरे विभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः ॥ अथर्ववेद-

११.५.३ - इस मंत्र में यह संकेत है कि जैसे माता बच्चे को अपने गर्भ में सम्भालती है वैसे ही आचार्य भी उपनयन करके विद्याध्ययन काल तक ब्रह्मचारी (शिष्य) को इस तरह सम्भालता है मानो वह बच्चे को अपने

गर्भ में ही रखता है । गुरु का आश्रय की शिष्य के लिये मानो गर्भ है ।

उपनयन काल- आश्वलायनगृहसूत्रों (१/१९/१-६) के अनुसार महर्षि दयानन्द ने बताया कि जिस दिन बच्चे का जन्म हो उसके आठवें वर्ष में ब्राह्मण, ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय, बारहवें वर्ष में वैश्य के बालक का यज्ञोपवीत करें । साथ में यह भी लिख दिया कि ब्राह्मण के १६, क्षत्रिय के २२ और वैश्य के २४ वर्ष से पूर्व यज्ञोपवीत अवश्य हो जाये वरणा वे पतित मने जायेंगे । अब हम विधिगत प्रक्रियाओं से कुछ विशेष जाने :-

१. दुग्ध-पान, दलिया या श्रीखण्ड खाना- उपनयन के निश्चित दिन से ३ या १ दिन पूर्व ब्राह्मण का बालक केवल दुग्ध-पान, क्षत्रिय का दलिया और वैश्य का बच्चा श्रीखण्ड खाये । “पयोव्रतोब्राह्मणो यवागुव्रतो राजन्य आमिक्षाव्रतोवैश्यः”- महर्षि दयानन्द ने यह भी कहा कि जब-जब भूख लगे तब-तब भी वे अपने नियत पदार्थ ही खायें । तीनों ही पदार्थ बलकारक/पोषक हैं पर दुग्ध सात्विकता, दलिया राजसिकता और श्रीखण्ड स्वादपूर्णता का प्रतीक है इससे हम समझ सकते हैं कि स्वाभाविकरूप से ब्राह्मण सात्विक, क्षत्रिय राजसिक और वैश्य स्वादपूर्ति भोजन प्रधान होते हैं अतः इनके लिये क्रमशः उपर्युक्त पदार्थों का भोजन उपनयन काल में उपयुक्त ही है ।

२. उपनयन की व्यावहारिकता- पूर्व ही उपनयन का अर्थ बताया गया है । उसके अनुसार ही ब्रह्मचारी आचार्य के समीप रहकर विद्या, बल और तेज को बढ़ाना चाहता है; साथ ही इस प्रकार कहता हुआ कि “ब्रह्मचर्यमागम् ब्रह्मचर्यसानि”पा.गु. २.२.६ - अर्थात् हे भगवन्, मैं ब्रह्मचर्य दीक्षा हेतु

आपकी शरण में आया हूँ । मुझे आशीर्वाद दीजिये -इस प्रकार वह विनम्रता, शिष्टता तथा श्रद्धा जैसे गुणों को ग्रहण करता है । तभी आचार्य उसे विधिवत् वस्त्र, उपवस्त्र धारण कराकर मंत्रोच्चारण पूर्वक तीन धागों का पवित्र यज्ञोपवीत भी धारण करवाता है ।

“ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुँच शुभं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

पा.गृ.सू. २.२.११”इसका अर्थ इस प्रकार है - यज्ञोपवीत परम पवित्र है । प्रजापति को यह सहज ही प्राप्त है । आयु, बल और तेज प्रदाता है । यह सदैव शुद्धता का प्रेरक है । -ऐसी प्रतिज्ञामूलक उपदेश देकर इस यज्ञोपवीत को शिष्य के गले में पहनाया जाता है । इसके तीन धागे हमें सदैव वैदिक संस्कृति के अनुरूप ब्रह्म-श्रद्धा, पितृ-यज्ञ और गुरु-सम्मान के प्रति कटिवद्ध रहने की अनुपम प्रेरणा देते हैं ।

३. व्रत-पालन की प्रतिज्ञा- कुछ निर्धारित मंत्रों के आधार पर मंत्रों का विधिवत् उच्चारण कर ब्रह्मचारी अपने व्रत को दृढ़ करता हुआ प्रतिज्ञा करता है कि अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र तथा व्रतों के स्वामी परमात्मा के नाम प्रतिज्ञा लेता है कि ब्रह्मचर्य धर्म निभाने में सदैव समर्थ होऊँ । “तच्छकेयम्” इस पाठ का पाँच वार दुहराना मानो प्रतिज्ञा में दृढ़ता लाना है । फिर “इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि” में झूठ से बचूँ और सदा सत्य को ही ग्रहण करूँ-ऐसा कहना उक्त प्रतिज्ञा को और ही दृढ़ करता है । यहाँ आचार्य पूर्वाभिमुख होकर ब्रह्मचारी की उन्नति की कामना करता है । पूर्वाभिमुख होने का भाव यह है कि आचार्य चाहता है कि उसका शिष्य सदैव सूर्य की तरह प्रकाशशील, उन्नतशील, तेजस्वी तथा अपने सब कार्यों

में नियमित रहे । आगे कहा गया- “अरिष्टाः संचरेमहि”-अर्थात् आचार्य और विद्यार्थी दोनों परस्पर प्रेम, अहिंसा, विकास तथा शुद्ध पर्यावरण में साथ-साथ विचरण करें । आचार्य यह भी प्रार्थना करता है कि “स्वस्ति चरतादयम्”-अर्थात् यह ब्रह्मचारी मेरे पास सदैव कल्याण ही प्राप्त करे ।

४. जलँजलि-मोक्षण- ब्रह्मचारी की अँजलि जल से भरकर आचार्य उसकी पूर्ण रक्षा का वचन देता है । पूर्व आचार्य अपनी अँजलि को जल से भरकर फिर उस जल को शिष्य की अँजलि में छोड़ता है । जब शिष्य की अँजलि भर जाये तब उसे पृथिवि पर छोड़ने हेतु आचार्य आज्ञा देता है । उद्देश्य स्पष्ट है । अञ्जलि में जल भरना और फिर उसे पृथिवि पर छोड़वाना सीधा संकेत है कि आचार्य के समीप रहकर ऐसे ही विद्या से भरपूर होना है और सारी पृथिवि पर घूम-घूम कर पायी हुई विद्या को जग कल्याणार्थ व स्वयं की उन्नति हेतु व्यवहार में लाना है । निसंदेह जीवन के सम्पूर्ण व्यवहार में वही विद्या तो काम आयेगी ।

५. सूर्यावलोकन व आचार्य की प्रदक्षिणा- ब्रह्मचारी वहाँ पर खड़े होकर सूर्य को देखता है और अपने आचार्य की प्रदक्षिणा करता है । शिष्य यह कहना चाहता है कि वह अपने गुरु की बाहर से पूरी रक्षा करेगा, सेवा करेगा और साथ ही गुरु जी का आदर करते हुये उनसे उनकी समग्र विद्या, बल व तेज को भी धारण करेगा ।

६. अँग-स्पर्श- प्रसन्नता वस आचार्य अपने योग्य शिष्य को पूर्णतया अपना कर उसके कंधे, उदर, हृदय आदि अँगों को स्पर्श कर आशीर्वाद देता हुआ अपने सात्त्विक भाव-तरंगों को शिष्य के भीतर प्रवाहित कर उसे

अनुकम्पित करता है । इससे शिष्य अत्यन्त श्रद्धावान् हो उठता है । यहाँ आचार्य भी पूरी तन्मयता से सँकल्प करता है कि वह विश्व की सब सम्भावित शक्तियों से एक उत्तम शिष्य का निर्माण करेगा । प्रथम प्रयास में ही दोनों के बीच सम्बन्ध पवित्रता और मजबूती पकड़ लेता है । धीरे-धीरे यह बढ़ता हुआ उद्देश्यपूर्ति का मजबूत आधार बन जाता है । आचार्य माँ की भाँति अपने शिष्य को प्रकाश मार्ग पर बढ़ते हुये सम्यक् ज्ञान देता है जो बच्चे के समग्र जीवन के उत्तम व्यवहारों को साधने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है । जैसे माँ अपने गर्भ में रखकर भी बच्चे को अपने सब व्यवहारों से उसे सीखाती रहती है, वैसे ही आचार्य भी शिष्य के साथ व्यवहार करता है । यही कारण है कि आचार्य को बच्चे की दूसरी माँ कहा जाता है । अपने सानिध्य में बच्चे को रखकर उसके सम्पूर्ण जीवन के प्रकाश व ज्ञान मार्ग को खोलने में पूरी उदारता वर्तता है ।

७. कन्याओं को भी उपनयन और वेदारम्भ का अधिकार- उपनयन सँस्कार से सँस्कारित होकर कन्या वेदाध्ययन करके विदुषी बने-यह महर्षि दयानन्द का उद्गार है । ब्रह्मचर्य का पालन करके ही गुरु के आश्रम में रहकर उपनयन से विद्या-प्राप्ति का अधिकार मिलता है । महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इसकी पुष्टि की है कि कन्या ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याध्ययन करे और समय आने पर युवा पति को प्राप्त करे । अथर्ववेद ११.२.४.३- ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्- इस प्रकरण में कन्या की शिक्षा और विवाह का विषय वर्णित है । इसी तरह श्रौत सूत्रों में लिखा है- इमं मंत्रं पत्नी पठेत्- अर्थात् यह मंत्र पत्नी पढ़े । यह तभी सम्भव होगा जब स्त्री पढ़ी-लिखी होगी । वह पढ़ तब सकती है जब इससे पूर्व उपनयन को प्राप्त हुई हो; यज्ञोपवीत धारण करने वाली कन्या व्रतपूर्वक

विद्याध्ययन कर जीवन के सब व्यवहारों को जाने । यजुर्वेद में स्त्री को “स्तोम पृष्ठा” कहा गया है जिसका अर्थ है-स्त्री यज्ञ की अधिष्ठाता हो; संचालिका हो । यज्ञोपवीत/ जनेऊ को धारण करना और यज्ञ की अधिष्ठाता बनना यह स्पष्ट करता है कि विना उपनयन के कन्या को यह योग्यता नहीं मिल सकती । यह सम्पूर्ण प्रकरण स्त्री के पठन-पाठन व उसे श्रेष्ठ बनने-बनाने का ही है । इन्हीं कारणों से आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने समाज की विकृत व्यवस्था को ठीक किया और लड़का हो या लड़की दोनों को समानरूप से समाज में प्रतिष्ठित कर शिक्षा, सँस्कार व हर सामाजिक पहलु में समान अधिकार देने की बात की जो वैदिक है । अन्य मजहबों के आक्रान्त होने के कारण समाज में स्त्रियों की यह प्रतिष्ठा लुप्त सी हो गयी थी जिसे महर्षि दयानन्द ने फिर से उन्हें दिलायी । अतः हम दोनों के लिये सब सँस्कार समान प्रतिष्ठा से ही करें ।

नोट- यह विचारणीय है कि अन्य मजहबों में भी इस सँस्कार का उल्लेख मिलता है । वैदिक धर्म से ही वहाँ पहुँचा है । जैसे- पारसी में यह “कुस्ती” कहलाता है । मुस्लिम मत में यह “ बिस्मिल्ला पढ़ना” कहा जाता है । इसमें बच्चों को

“बिस्मिल्ला ईर्रहमान ईर्रहीम” पढ़ने को कहा जाता है । जैसे वैदिक धर्म में “गायत्री मंत्र” पढ़ने/बोलने के लिये कहा जाता है । ईसाइयों में इसे “बप्टिस्मा” (बैप्टिज्म) कहा गया है । यूनानि भाषा में इसका अर्थ इस तरह पाया जाता है- “पुनरुत्पत्ति” । यह शब्द वैदिक शब्द द्विज का समानार्थक है । उपनयन के वाद ही वच्चा द्विज बनता है ।

International Yoga Day

Folding of both hands in the logo symbolizes Yoga, which reflects the union of individual consciousness, a perfect harmony between mind and body, man and nature, the holistic approach to health and well-being. The brown leaves in the logo symbolize the earth elements; the green leaves the nature, blue the fire and the white sun symbolizes the source of energy and inspiration.

The ultimate goal of all mankind, and of all religions, is but one — reunion with God. But while the aim is one, the method of attaining may vary. Both the goal and the methods employed for reaching it is called Yoga.

This 21st June, India with the support of 177 countries including some Muslim and others of the world is gearing up for celebrating first International Day for Yog. This clearly indicates the widespread recognition to healthy and harmonious living propagated by the ancient Indian Sages. So the plans are underway to commemorate the first international Yoga Day on this day on a grand scale in India and across the world after the UN General Assembly adopted a resolution last year to mark the day as International yoga day.

People are passionate about yoga are certainly clear that you don't have to identify as Hindu or Buddhist in order to practice it. Christians can go to their yoga class and still be Christian, and so can Muslims.

It is unfortunate that while the whole world is recognizing Yog as India's civilization contribution to humanity, some people of other faiths in India are trying to rake up controversies by bringing in religious connotations. There is no doubt that Yog is the Indian way of life and is not connected to a religion or certain religious practices or opposing it on the ground of certain hymns. For some Christians churches who have embraced Yoga have erroneously strayed into participating in this Hindu religious practice, which is in total opposition to the biblical worldview. It is un-Christian and a sacrilegious practice. For them Bible strictly forbids Christians from dabbling in this pagan and occult practices; and yoga should not be viewed as an exception, even if it has some physical benefits. For them there are countless other ways to exercise that have nothing to do with this pagan religious practices.

Yoga has indeed become popular all over the world. Many millions practice it – from schoolchildren to senior citizens – But strangely, in our own country India, yoga was not valued even a few decades ago. The reason was that under British colonial rule, Indian tradition was projected as worthless and Britain as the perfect role model. It was a dying art in India. Only the wealthy could afford to practice. Everyone else was busy trying to feed their families. The credit for the revival of Yoga in India goes mainly to Swami Ramdev. He is largely responsible for giving a tremendous boost to yoga in India. He also travelled tirelessly through the country and other countries for several years teaching yoga and explaining its benefits to millions. Single handedly, he changed the negative image of yoga in India.

Yoga is huge, Yoga is has now become part of the US culture but is practiced mainly by the upper class and women. It has become a billion dollar worldwide phenomenon. And wherever there is the scent of money, thousands of people will follow. In many cities there are more yoga studios than coffee shops with hundreds of classes per day conducted by some non yogis as teacher mainly because it is a very lucrative business. It is okay to earn a living by teaching yoga, but it is a crime to patent it as ‘power yoga’, ‘sex yoga’, hot yoga etc.

Celebrating Yog day can make us conscious about practicing Yog as a way of our life. We need to train our minds to be in tune with the nature. It is a necessity and has to be mentally accepted and physically exercised across every culture, class, gender and nationalities. The best way to make this possible is introducing Yog as a part of curriculum in schools and every society.

Yoga is not worship for any kind. Even Surya Namaskar is not a form of worship. It is just the name of this exercise like the many other Asanas. Anyone can do this exercise even if there is no Sun. It can be done after sunset or when it is foggy or cloudy or indoors where you don’t see any sun. One can face to the north, south, East or West and still do this exercise. Muslim face towards holy Mecca while performing Namaz while praying because Islam dictates that and can do Surya Namaskar while facing Mecca because it is believed that Allah, God or Ishwar is present everywhere and in every direction. So it is meaningless to say that Surya Namaskar is offering prayers to Sun. This exercise should be included in yoga day celebration and let people face whichever the direction they wish to.

By Shailesh Joshi

Dayanand Anglo Vidyalaya (DAV) **In Birmingham**

The 8th Principle of Arya Samaj states “We should all promote knowledge and dispel ignorance.” Arya Samaji people, wherever they are, have been actively promoting education in the world.

The members of the Board of Trustees have been working hard to open a DAV school in Birmingham for 4 to 11 years age children in Handsworth area of Birmingham.

The Vision of DAV School –

- 1. We want parents to be able to send their children for high quality education at our school called Dayanand Anglo Vedic (DAV) Primary School based in Handsworth area of Birmingham.**
- 2. Our school will follow the National Curriculum and prepare children for 11plus entrance examinations into good secondary schools.**
- 3. Our school will accept children from the age of 4 years in Reception class and will be building up from Reception in future. There will be 2 forms of entry and maximum no. of children in each form will be between 20 to 24 students.**
- 4. We want children attending our school to learn about British values. There will be an extra emphasis on teaching about Hindu (Vedic) way of life i.e. respect for**

teachers, parents and elders in the society, to speak truth and be honest and polite and tolerance for other members in the community and believe in God. Children will be taught about all prevailing religions in UK.

5. In addition to academic curriculum our school will offer Yoga classes, sports and dance classes.
6. Our school will be faith designated. We will be admitting up to 50% of pupils of Hindu faith and the rest will be open to pupils of all faiths and no faiths.
7. Our school will aim for each child to reach his/her full potential and aspire for higher education.


It is our sincere request to parents with 1 to 3 years old children to get in touch with Arya Samaj West Midlands in order to fill in "School support survey" to show their support for our school. Your support for our school will be much appreciated.

We are looking for a Head or Deputy Head Teacher of a Primary School to join our team of members working for proposed DAV Primary School. A recently retired Head Teacher will also be acceptable. We also need a Project Manager to join our team. Those of you who are interested please get in touch with us by telephoning Arya Samaj West Midlands no. 0121 3597727 or sending an email at enquiries@arya-samaj.org

Dr. Narendra Kumar
Chairman
The Board of Trustees
Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)

- Matrimonial service charge - £90 for 12 months
- **Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together) Saturday 19th September 2015. Register NOW for a place! (See pages 17 & 18 for detailed information)**
- Please note that Arya Samaj Birmingham and Arya Samaj London are not linked. We both have our **OWN** Matrimonial list and all events are organized **separately**.
- Please note in every issue of Aryan Voice, if anyone that has a * asterisk at the end of there Job, **ONLY** wants to marry in there own caste. Eg

B4745 Hindu Brahmin Boy 26 5 ' 7" Chartered Accountancy* 

- All members' records have not been changed yet, as we are still waiting on caste forms, please keep checking this information every issue before you call.
- If you would like to add your caste to your record or state if you only want to marry in caste. Please e-mail or call us, so we can update your record.
- Everymonth in matrimonial list please check whole list, as members that have been deleted, may renew again months later and are being missed, as they take there place on the list depending on ref number order.
- Please inform us when your son or daughter is engaged or married, so we can remove their detail from the list.

VEDIC VIVAH MELA (Matrimonial Get Together) **2015**

Date: Saturday 19th September 2015

Venue: Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells,
Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website)
www.arya-samaj.org

Time: 11.30am – 5pm

Cost: £25.00 per applicant. **NO GUESTS**

Buffet: Vegetarian meal included with soft drinks (no alcohol will be allowed or served)

How will it work?

We will have registration, welcome drink, light snacks and mingling.

Speed dating - Members will meet each other for a period of 3 to 4 minutes, during which you will be able to chat and find out about each other. (If you like the person, make a note of their ref number on the packs given on the day and we will send you there information by email). When the time is up, a bell will sound; you will change partner and repeat the process.

Once the speed dating is over, late lunch will be served and everyone is free to mingle some more before the end of the event.

We will explain the above and other details of the event on the day.

What you need to do now?

This Get-together is strictly for Arya samaj west Midlands registered matrimonial service candidates only. So if you are not registered as yet and wish to benefit from this event where you can meet personally a number of prospective partners hurry up and join. Forms are available on our website www.arya-samaj.org. Or tel. 0121 359 7727

This time we have decided to limit the number of participants, so please send your application forms well before the day of the event because it is first come first served basis. **(Form can be found on website or by calling the office)**. For the smooth running of the event, all the information must be processed and the paper work completed for the participants on their arrival. Applications received after 7th September 2015, would not be entertained. But please do not wait till the last date. It might be too late.

Sorry at this event we are not allowing guest. If you bring someone with you on the day they will be refused entry.

Please send application forms and cheques made payable to ‘Arya Samaj West Midlands. **(Applicants £25)** with a self addressed stamped envelope to Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA .You will be sent confirmation by post and email. You will have to bring this with you on the day or no entry will be allowed. Regrettably no entry will be available on the day, so please register in advance.. **If you come on the day without an entry confirmation it would be a wasted journey.**

So what are you waiting for? Look no further and think no further! Send in your application forms and cheque today!

We look forward to welcoming you to the event where you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!

Donation Boxes - **Kind request notice**

Dear All Arya Samaj and Matrimonial Members.

Last year we sent out donation boxes to each member for you to fill up with loose change.

We request kindly, that if you have filled up these boxes please send them in to Arya Samaj or deposit the money in to our account. All information is on the box.

Thank you to all members who have already fill their boxes and returned them to us.

If you would like a new box please contact the office on 0121 - 359 7727 and we will send you one.

If you haven't used your box, please do so, as all donations are appreciated and help your chairty.

We count on our member's support

Thank you in advance for your support and generosity

Dates for your diary

In Our Bhavan

1. Annual General Meeting (AGM)

AGM will be held in our Bhavan on Sunday, 26th July 2015
at 12 pm.

All members will receive a letter of notification about AGM
meeting by post in due course.

2. Indian Independence Day Celebrations

Sunday 16th August 2015

11am Havan, 12pm to 1.30pm Celebrations and there after Rishi
Langer.

3. Raksha bandhan

Saturday 29th August 2015

4. Ved Katha

Saturday 29th August to 5th September 2015 every evening at
7.00pm to 9.00pm. At end of programme, every evening, there
will be light refreshment together.

5. Krishna Janmaashthmee

Saturday 5th September 2015

To be celebrated on the last day of Ved Katha

6. Gayatri Maha Yajna

Sunday 6th September 2015

News

Donations received for Nepal Earthquake Appeal - We have collected nearly £3000 after this appeal. We are sending this money to Nepal Doctors Association based in UK for the use on patients affected by the major earthquake in Nepal. Quite a few Nepalese Doctors working in UK as consultants in various specialities have been to Nepal to treat victims of Earthquake disaster on 24th April 2015. They will be going back to Nepal to attend these patients. In opinion of the Members of the Board of Trustees it is best to send the money to Nepal Doctors Association for honest and worthwhile use of funds.

Donations for Nepal – Earthquake – Fund

- | | |
|----------------------|------|
| • Mr. Varindar Bahal | £101 |
| • Dr. B.K. Prashara | £20 |
| • Miss C.P.Snatak | £5 |
| • Mrs. Nirmal Prinja | £25 |
| • Mrs. Indu Sharma | £5 |
| • Mrs. Usha Jain | £21 |
| • Mrs. Ved Datta | £20 |
| • Mr, Krishan Chopra | £100 |

Total - £297 - Thank you!

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 5th July & 2nd August 2015.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

IMPORTANT

Notices to Arya Samaj West Midlands Members

- Dear members, we are updating our email database for the membership of Arya Samaj West Midlands. We do not have email addresses of a large number of our members. In this time and age it is important to have this information. So if you have an email address please inform our office by emailing your address to enquiries@arya-samaj.org. Your cooperation will be highly appreciated.

Notices to Matrimonial Members

- **NEW DATE** - Vedic Vivah Mela is on Saturday 19th September 2015 (Matrimonial Get Together). All information and forms can be found on our website - www.arya-samaj.org. Alternatively request an application form by ring 0121 359 7727 or emailing enquiries@arya-samaj.org.

Register NOW for a place!